**International Journal of Academic Research and Development**
**ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.academicsjournal.com**
**Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 315-316**

# हिन्दी साहित्य में मानवीय मूल्य

**अजमेर**

बुटाना, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

**प्रस्तावना**

मूल्यों का प्रारम्भ परिवार से होता है। परिवार के दायरे से बाहर निकलकर मनुष्य व्यापक समाज में आता है। ग्राम, प्रांत, देश सब उस व्यापक समाज के घटक हैं। अतः साहित्य समाज का दर्पण है। यह उक्ति सार्थक प्रतीत होती है। उपनिषदों के 'सत्यम्' वद् 'धर्म–चार' से लेकर कबीर तथा तुलसीदास से लेकर रहीम के नीति काव्य तक व्याप्त नीति साहित्य में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रत्यक्ष प्रयास है। आधुनिक साहित्य में मूल्य शब्द का प्रयोग व्यैक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक स्तर का सम्पूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। 'मूल्य' शब्द की आवश्यकता, प्रेरणा आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयोग होता है। भारतीय जीवन एवं साहित्य में मानव मूल्यों के चिंतन की परम्परा प्राचीन है। मानव मूल्य व्यक्ति के आचरण को निर्देशित और मूल्यांकन करने के आदर्श मापदण्ड है। साहित्य का जीवन मूल्यों के साथ दोहरा सम्बन्ध है। एक और जहाँ साहित्य स्वच्छ दर्पण बनकर अपने समय के सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिम्बित करता है तो दूसरी ओर उनकी मीमांसा करके उनके संशोधित रूप प्रस्तुत कर समाज विशेष के सदस्यों को नये मानव मूल्यों के निर्माण की प्रेरणा देता है। साहित्य में व्यक्त वे सभी घटनाएँ जो मानव जीवन के विकास क्रम में योग लाने वाली है अथवा वे क्रियाएँ जो मानव की मूल प्रवृत्तियों का सम्यक् पोषण एवं संवर्द्धन करती है। मानवतावाद के अंतर्गत ली जाएंगी। हिन्दी साहित्य में वेद हमारे जीवन की वह आधारशिला है''[1], जो हमारे स्वार्थ लोभ, घृणा, कट्टरता, हठवादिता आदि का उन्मूलन कर प्रेम, सेवा, त्याग, कर्त्तव्यनिष्ठा समर्पण एवं उत्सर्ग का भाव सिखाता है। वेदों में वर्णिता समता, सहायता और स्नेह का यह आदर्श मानव समाज के उन्नयन, व्यक्ति के सुख और व्यवहार की सात्विकता की ही कामना के रूप में अभिव्यक्त हुई है–

''सहृदयं सामनसमाविद्वेषं कुणोमि वः।
अन्योऽ्यमभिर्ध्यत वत्सं जातमिवाध्नया।।''[2]

अथर्ववेद की ये पंक्तियाँ प्रेम की उच्चतर भावना को निर्देशित करती है। समभाव का महान आदर्श जिससे मानवीय प्रवृत्ति को स्पष्ट अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। प्रस्तुत पंक्तियों में विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

''समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।।''[3]

भारतीय जीवन को सत्यनिष्ठ, संयत् उदात तथा औदार्य भावना से मुक्त बनाने में वैदिक ऋचाओं ने बड़ी प्रेरणा दी है। आगे चलकर इस भावना को उपनिषदों, पुराणों और गीता में विस्तार मिला। परम एकत्व के इस आदर्श के अंतर्गत सभी प्राणियों के प्रति सम्भाव और कर्त्तव्य के आदर्श का विवेचन बड़ी विश्दाता के साथ गीता में किया गया है। सत्य, अहिंसा, अभय, शांति, अहंकार, त्याग, दया, क्षमा, पवित्रता तथा मैत्री भाव जैसे मानव मूल्यों का उपदेश श्री कृष्ण स्वयं अर्जुन को देते हैं–

अहिंसा सत्यक्रोधस्यत्यागः शांतिरपैशुनमा
दया भूतेष्वलोलुत्तवं मार्दवं हीरयापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौयमद्रोरी नाति मानिता
भवन्ति सम्पद देवीमाभिजातस्य भारत।।[4]

मानव मूल्य की ऐसी प्रबल भाव भिन्न–भिन्न प्रकार से बौद्ध तथा जैन साहित्य में भी प्राप्त होते हैं। बौद्ध धर्म में करुणा का स्वर सर्वोच्च है और करुणा का आदर्श ही विश्व बंधुत्व का सशक्त संदेशवाहक है। बौद्ध धर्म की अपनी विशिष्टता लोक सुखमय संदेश करुणा, मैत्री और भ्रातृत्व की भावना है। बौद्ध धर्म की ऐसी विशेषता और उपयोगिता के महत्त्व को स्वीकारते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि मैं बौद्ध धर्म को पसंद करता हूँ क्योंकि उन तीन सिद्धान्तों का समन्वित रूप जो अन्य धर्मों में नहीं मिलता–पूजा, करुणा तथा समता की शिक्षा बौद्ध धर्म देता है। ''जैन साहित्य में अहिंसा को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। त्याग और संयमपूर्ण जीवन निर्वाह प्रेम और करुणा शील व सदाचार का आदर्श महावीर के प्रवचनों का सार था। जो विश्व कल्याण की भावना से ओतप्रोत था। मानव मूल्य की दृष्टि से हिन्दी साहित्य समृद्ध और सम्पुष्ट है। आदिकालीन हिन्दी साहित्य से लेकर समकालीन हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति में एकता का स्वर मिलता है। साहित्य का मूल उद्देश्य जीवन और समाज की कुरीतियों व बुराइयों से हटकर स्वस्थ सुंदर और आनन्दमय जीवन की ओर अग्रसर करना है। साहित्यकार व्यक्ति से अधिक समाज, समाज से अधिक राष्ट्र को महत्त्व देता है। अपनी लेखनी के माध्यम से मानव में दया, प्रेम, त्याग, सहभाव उदारता तथा परोपकार जैसे मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रेरित करता है।''5 हिन्दी साहित्य में कबीर का व्यक्तित्व एक मजबूत आधार के रूप में उपस्थित है। कबीर ने अपने समय में देखा कि लोक मानव का दर्पण कुरीतियों, बाह्याडम्बरों और अनधविश्वासों से इतना धूमिल हो गया है। वह सत्य को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता। कबीर ने दया, विश्व–बन्धुत्व और प्रेम की भावना पर विशेष जोर दिया। कबीर ने मानवतावादी भावों से अनप्राणित होकर कहा–

''दया दिल में राखिये, तू क्यों निरदयी होय।
साई के सब जीव है, कीड़ी कुंजर सोय।।''[6]

कबीर की वाणी ने समाज में एक ओर बड़ा कार्य किया था। वह था सात्विकता ओर आचरण प्रणवता। उन्होंने विभिन्न आचरणों में सत्याचरण, सारगहिता, शील, क्षमा, दान परोपकार अहिंसा आदि गुणों का उपदेश दिया। कबीर की मानवतावादी जीवन दृष्टि के विषय में डॉ. पारसनाथ तिवारी लिखते हैं– ''सच्ची बात है कि हिन्दी साहित्य में कबीर से बड़ा मानवतावादी कोई नहीं हुआ। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अंधविश्वासों,

रूढ़ियों तथा मिथ्या सिद्धातों द्वारा प्रचारित सामाजिक क्षमताओं विषमताओं का मूलोच्छेद करने का बीड़ा उठाया है और निर्भयता पूर्वक सभी पाखण्डों पर प्रहार किया है। सामाजिक स्थिति की दृष्टि से मध्यकाल का पूर्वार्द्ध भी आज की तरह विघटन नैतिक पतन धार्मिक वैमनस्य वर्ग भेद आचरण हीनता जैसे अनेक अस्वस्थ प्रवृत्तियों की क्रीड़ास्थली बन गया था।''[7] तुलसीदास ने भी अपने साहित्य के द्वारा मानवीय मूल्यों की स्थापना पर विशेष बल दिया है। इनकी अमर निधी 'रामचरितमानस' हमारे आदर्श समाज का प्रतिबिम्ब है। जिसके द्वारा उन्होंने आपसी ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरता आदि भावों को दूर कर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को स्थापित किया इन्होंने भारतीय जनसमुदाय को पाप–पुण्य, सत्य असत्य आदि का सही ज्ञान कराकर उन्हें सन्मार्ग पर लाने का प्रयास किया वे कहते हैं कि दूसरों की भलाई करने से बढ़कर कोई मूल्य नहीं और दूसरों को कष्ट पहुँच से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

''परहित सरिस धर्म नहीं भाई
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।''[8]

आधुनिक हिन्दी साहित्य कई कालों में विभक्त है। हमारे देश व समाज में इस लम्बी अवधि में अनेक सामाजिक राजनीतिक तथा वैचारिक परिवर्तन हुए। जिसका प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ा। इस काल के साहित्यकारों ने भारतेन्दु, प्रेमधन, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र आदि तथा छायावादी व छायावादोत्तर साहित्यकारों ने समाज की हीन व्यवस्था के प्रति अपनी भावनाएँ प्रकट की है तथा सामाजिक पुनरुत्थान की दिशा में सभी प्रकार से योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य अहिंसा, समता सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा तथा प्राणी मात्र के प्रति सहानुभूति, स्नेह और करुणा की उदात्त भावनाओं को लेकर है। इन सभी आदर्शों की प्रतिष्ठा हिन्दी साहित्य में दर्शनीय है। इसलिए श्रद्धा का संदेश है–

''औरों को हँसते देखो मनु
हँसों और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृतकर लो
सबको सुखी बनाओ।।''[9]

करुणा और संवेदना के अतिरिक्त सामान्य सदाशयता और आदर्शों तथा मानव प्रेम सम्बन्धी भावनाओं की अभिव्यक्ति भी हिन्दी साहित्य का वैशिष्ट्य रहा है और इन सबमें मानवीयता का उदात्त रूप ही प्रकट हुआ है। वसुधैव कुटुम्बकम व विश्वबंधुत्व की भावना से, कवि एक नयी मानवता की रचना करना चाहता है–

''सर्व मुक्ति हो मुक्ति तत्त्व अब,
सामूहिकता ही निजत्व अब
बने विश्व जीवन की स्थूल निधि।''[10]

मानव के प्रति निराला के मन में गहरी आस्था, सहानुभूति और सम्मान भाव भी है। सात्विक प्रवृत्ति के विकास के लिए दृष्टि की पावनता आवश्यक है। निराला कहते हैं कि–

''पावन करो नयन, रश्मि नभ नील पर
लघुकर करो चयन।''[11]

समरसता का यह संदेश केवल वैयक्ति भूमिका पर न दिया जाकर सम्पूर्ण सृष्टि के लिए दिया गया संदेश है। गिरिजा कुमार माथुर युगीन वैषमय से परिचित थे। इसीलिए वे मानवीय मूल्यों के विघटन को रोकने लिए प्रयासरत है–

''कोटि मनुजों में भरों छवि सभ्यता की।
कोटि कष्टों में बनी ध्वनि मनुजता की।।''

मानव कल्याण की चिंता नागार्जुन भी करते हैं। नागार्जुन की कविता में जहाँ एक और राजनीतिक धरातल है। वही दूसरी ओर मनुष्य के शोषण से मुक्ति के लिए प्रेम और विश्व बंधुत्व की भावना है।

''विषमता के प्रति घृणा का अनोखा उपहार लो,
विश्व मानव के लिए मनुहार लो।।''[12]

इनके साथ मुक्तिबोध की कविता में सर्वजन कल्याण की भावना निहित है। उनके साहित्य दृष्टि का मूल प्रेष्य ही विश्व बंधुत्व की भावना है।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों की पूर्ण अवधारणा हिन्दी साहित्य में देखने को मिलती है। मानवीय भूमिका पर एक और हमें साहित्य में उदात्त की भावना के दर्शन होते हैं, तो दूसरी ओर उनके चरित्रों में हम उस आदर्श को प्रतिष्ठित हुआ पाते हैं, जिससे समाज में स्वस्थ प्रवृत्तियों का विकास हो सकता है और मानव जाति को उच्चतर जीवनयापन की सही दिशा प्राप्त हो सकती है।

**संदर्भ सूचीः**

1. हिन्दी साहित्य में विविधवाद, डॉ. प्रेम नारायण शुक्ल, पृ. 524
2. अथर्ववेद 3/30
3. ऋग्वेद, 10, 16, 14
4. गीता 16/2/3
5. संत कबीर का साहित्य, डॉ. बिन्दु दूबे, पृ. 41
6. कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व, श्री शरण, पृ. 69
7. कबीर साहब, डॉ. गुरुदेव सिंह, पृ. 51
8. कामयानी, जयशंकर प्रसाद (कर्म सर्ग), पृ. 140
9. वही, पृ. 142
10. युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 14
11. अपरा, निराला, पृ. 12
12. पुरानी जूतियों का कोरस, नागार्जुन, पृ. 30